1

यीशु ही उज़्र है

(मरकुस 2:1-12)

आपके विषय में मैं सब कुछ तो नहीं जानता, पर इतना अवश्य जानता हूं कि इस समय आप किसी परेशानी में हैं। यह परेशानी आत्मिक, स्वास्थ्य सम्बन्धी, आर्थिक या पारिवारिक हो सकती है। कहने का अभिप्राय यह है कि आप किसी न किसी समस्या से परेशान अवश्य हैं। इस पाठ में मैं यह साबित करना चाहता हूं कि ''यीशु'' ही हमारी हर समस्या का उत्तर है, चाहे वह समस्या कैसी भी क्यों न हो।

पूरा नया नियम इसी महान सच्चाई की घोषणा करता है, परन्तु अपनी इस बात को साबित करने के लिए आइए हम यीशु के जीवन की एक साधारण सी घटना को देखते हैं, जो मरकुस 2:1-12 में मिलती है।

चार मित्र और एक रोगी (मरकुस 2:1-4)

वचन का आरम्भ ''कई दिन बाद वह फिर कफ़रनहूम में आया ...'' (आयत 1) के साथ होता है। कफ़रनहूम गलील में यीशु के कामों का केन्द्र बन चुका था। इस स्थान के बारे में हम मरकुस के पहले अध्याय में पढ़ते हैं (1:21)। उस समय उसने अशुद्ध आत्मा से ग्रस्त एक व्यक्ति (1:23-27) और ज्वर से पीड़ित पतरस की सास को चंगा किया था (1:29-31)। दिन का अन्त एक अद्‌भुत चंगाई सभा के साथ हुआ था (1:32-34)। अब यीशु कफ़रनहूम में वापस आ गया था।

गलील के व्यस्त लम्बे सफ़र के बाद वह शायद यहां आराम करना चाहता था (देखें 1:35, 45), पर ''यह सुना गया कि वह घर में है'' (आयत 1)। KJV बाइबल में है, ''शोर मचा कि वह घर में है'' (आयत 1)।[1] खबर फैल गई कि ''यीशु वापस आ गया है!''

''फिर इतने लोग इकट्ठे हो गए कि द्वार के पास भी जगह नहीं मिली'' (आयत 2)। उस ज़माने में अतिथि सत्कार जीवन का एक भाग था। दिन के समय प्राय: घरों के दरवाज़े खुले रखे जाते थे। लोग जब चाहें आ-जा सकते थे। देखते ही देखते वह घर जहां यीशु ठहरा था, लोगों से भर गया। भीड़ दरवाज़े के बाहर तक जमा हो गई थी।

आयत 2 के अंतिम भाग को देखें: ''और वह उन्हें वचन सुना रहा था।'' यीशु खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया (लूका 19:10)। यही उसका प्रमुख कार्य और उसके कार्यक्रम में सबसे ऊपर था। इस कारण वह हर अवसर का इस्तेमाल वचन सुनाने के लिए करता था।

यह उन चारों मित्रों की कहानी की पृष्ठभूमि है: ''और वे लोग एक लकवे के रोगी को[2] चार मनुष्यों से उठवाकर उसके पास ले आए'' (आयत 3)। आइए अब पूरी तस्वीर देखते हैं। उन

चारों का एक मित्र था, जो ''लकवे का मारा हुआ'' था और चल-फिर नहीं सकता था, लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं हो जाती। इस विषय के टीकाकारों का कहना है कि वह रोगी व्यक्ति लकवे के साथ मिरगी से भी पीड़ित था।

> मासपेशियों का नियंत्रण नहीं रहा था; परन्तु अचानक कभी-कभी दर्द के झटके आते थे, और रोगी भूमि पर गिरकर दर्दनाक पीड़ा से छटपटाने लगता; बार-बार आने वाले इन झटकों की इस भयानक पीड़ा से केवल मृत्यु ही उसे छुटकारा दिला सकती थी।[3]

यह व्यक्ति भयानक शारीरिक पीड़ा में था!

पता नहीं कि यीशु इससे पहले जब कफ़रनहूम में आया था, उस समय इस रोगी को यीशु के पास क्यों नहीं लाया गया। हो सकता है कि उस समय वह नगर में न हो; या हो सकता है कि उसके मित्र नगर में न हों; हो सकता है कि पिछली बार उसे लाने में उन्हें देर हो गई हो। जो भी हो, इस बार ये चारों मित्र किसी प्रकार की गलती नहीं करना चाहते थे। वे उसे उसकी खाट के साथ ही उठा लाए। शायद उस पर एक पतली दरी भी थी, जो आम तौर पर ज़मीन पर बिछाई जाती है। (हर मित्र ने उसका एक सिरा पकड़ा हुआ होगा।)

यहां हम चार लोगों को देखते हैं, जिन्होंने इस बात को समझ लिया था कि उनकी समस्या का उत्तर यीशु ही है-बल्कि उनके मित्र की समस्याओं का एकमात्र उत्तर भी यीशु ही है। आयत 5 में उनके विश्वास के बारे में पढ़ते हैं। यीशु पर उन्हें कैसा विश्वास था?

सहायता करने की यीशु की सामर्थ में

सबसे पहले इन चारों मित्रों को यह विश्वास था कि यीशु में सहायता करने की ''सामर्थ'' है।[4] उसकी यह शक्ति यीशु की कफ़रनहूम की पहली मुलाकात में ही पता चल गई थी। उसकी गलील की महान यात्रा में भी यह शक्ति दिखाई गई थी, जो उसने थोड़े दिन पहले ही पूरी की थी।

हमारे लिए यह समझ लेना आवश्यक है। हम सबके सामने समस्याएं आती हैं। कई बार हम यह मानते हैं कि हमारी समस्याएं सबसे अलग हैं और किसी की भी ऐसी समस्याएं नहीं हैं। हमें यह भी लग सकता है कि हमारी समस्याएं सुलझाने में कोई सहायता नहीं कर सकता और उनका कोई समाधान है ही नहीं। हमें यह पता होना आवश्यक है कि ''जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभाव रहित नहीं होता'' (लूका 1:37)!

सहायता करने की यीशु की इच्छा में

इन लोगों का विश्वास उस व्यक्ति से भी अधिक था। उन्हें यह विश्वास भी था कि यीशु में अपनी शक्ति का उपयोग करने की *इच्छा* भी है और उसे *ध्यान* है। यह विश्वास करने के उनके पास कई कारण थे। यीशु ने कफ़रनहूम की अपनी पहली यात्रा में ही यह चिन्ता दिखाई थी, किन्तु उसकी हाल की गलील यात्रा के दौरान एक घटना में विशेष रूप से यीशु का तरस दिखाई दिया था।

इस यात्रा की घटनाओं के विवरण में एक कोढ़ी को चंगा करने के आश्चर्यकर्म की एक घटना का विस्तार सहित विवरण है। ''और एक कोढ़ी ने उसके पास आकर, उससे विनती की और उसके सामने घुटने टेककर, उससे कहा 'यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है' '' (मरकुस

1:40)। यहां एक संक्षिप्त-सा वाक्य है, जो हो सकता है कि हमारे ध्यान में न आए: ''उसने उस पर तरस खाकर, हाथ बढ़ाया, *और उसे छू कर* कहा, मैं चाहता हूं तू शुद्ध हो जा'' (आयत 41)।

कई साल पहले, बेल टेलीफोन कंपनी ने विज्ञापन का एक अभियान चलाया था, जिसका विषय था, ''हाथ बढ़ाओ और किसी को छू लो।''[5] इन विज्ञापनों में ''किसी को'' का अर्थ परिवार का सदस्य, मित्र अथवा अपना प्रिय व्यक्ति था, न कि कोई भूखा-नंगा, या कंगाल या कोई गन्दा या बीमार व्यक्ति।[6] पर यीशु ने हाथ बढ़ाकर ''एक कोढ़ी'' को छू लिया।

उस ज़माने में ''कोढ़'' शब्द का इस्तेमाल कई संक्रमित एवं दुर्बल करने वाले रोगों के लिए किया जाता था। कोढ़ियों को समाज के दूसरे लोगों से अलग रहना पड़ता था। आम आदमी कोढ़ी को छू नहीं सकता था। पर यीशु ने ''हाथ बढ़ाया और उसे छू लिया।''

यीशु ने उसे *क्यों* छुआ? क्या चंगाई की प्रक्रिया के लिए यह आवश्यक था? मुझे नहीं लगता।[7] मेरा मानना है कि यीशु ने उसे उसी कारण छुआ, जिस कारण कोई दुखी व्यक्ति की पीठ को सहलाता है या शोकित व्यक्ति को गले लगाता है। अब उस आयत पर फिर ध्यान दें: ''*और उस पर तरस खाकर,* उसने अपना हाथ बढ़ाया और उसे छू लिया।''

उन चारों ने जो कुछ किया, वह वे कभी नहीं न करते यदि उन्हें यह विश्वास न होता कि सचमुच *यीशु को ध्यान है*। इस सत्य का पता होना आवश्यक है। यीशु हमारी समस्याओं का उत्तर ही नहीं है, वह हमारी चिन्ता भी करता है। वह हमारी सहायता करना *चाहता है*।

उन चारों को अपने मित्र को यीशु के पास ले आने के बाद एक और दिक्कत आई। वे उसे मिलने पहुंची ''भीड़ के कारण उसके निकट नहीं पहुंच सके'' (आयत 4)।[8] याद रखें कि घर खचाखच भरा हुआ था, क्योंकि लोगों की भीड़ दरवाज़े तक थी (आयत 2)। यदि मैं उन चारों में से एक होता तो यही कहता, ''हमने अपनी हर कोशिश कर के देख ली है; अब घर लौट चलते हैं।'' या फिर शायद यह कि ''चलो, अपने दोस्त को किसी पेड़ की छाया में रख कर भीड़ कम होने की राह देखते हैं।''[9] पर इन चारों ने ऐसा कुछ नहीं किया। उन्हें यह मालूम था कि उनके मित्र की दयनीय स्थिति का उत्तर यीशु ही है यानी वही एकमात्र उत्तर है। इसलिए उन्होंने तीन काम किए:

(1) उन्होंने वह किया, जो *कठिन* था:[10] वे अपने मित्र को छत के ऊपर ले गए। बचपन में बाइबल क्लास में हम जिन चित्रों के कार्ड इस्तेमाल करते थे, उनमें एक ऐसा चित्र था, जिसमें एक घर दिखाया गया था, जिसके बाहर की ओर सीढ़ियां थीं। सम्भव है कि उस घर में भी ऐसी ही सीढ़ियां हों। और यदि हो तो भी खाट पर पड़े हुए लकवे के मरीज को दरी से छत पर चढ़ाना आसान काम नहीं था।[11] हालांकि उस घर में ऐसी कोई सीढ़ियां नहीं थीं, परन्तु यह मानने का कोई भी कारण नहीं है। उस इलाके में घर एक-दूसरे से बिल्कुल सटे हुए बनाए जाते थे और पड़ोस में यदि सीढ़ियां हों भी तो वे एक-दो मकान छोड़कर ही होंगी। इसलिए इन चारों को अपने मित्र को लेकर दो-चार घरों की छतें भी फांदनी पड़ी होंगी। मैं कल्पना करता हूं कि उन्हें एक टूटी-फूटी सीढ़ी मिली होगी, जिसे उन्होंने उस मकान से सटाकर खड़ा किया और उस पर से अपने मित्र को ऊपर खींच लिया। यानी अपने मित्र को छत पर चढ़ाने के लिए जो भी वे कर सकते थे, उन्होंने किया। उन्होंने वह किया, जो कठिन था।

(2) उन्होंने वह किया जिसकी *उम्मीद नहीं* थी: ''उन्होंने छत को खोल दिया'' (आयत 4) मूल में ''उन्होंने छत को बेछत कर दिया'' है। उस ज़माने में अधिकतर छतें दीवारों पर आर-पार

शहतीर रखकर बनाई जाती थीं। शहतीर पर बल्लियां और टहनियां डालकर उन पर घास-फूस और गारा लगा कर उसे समतल किया जाता था और धूप में सुखाया जाता था। इन चारों ने छत ''उधेड़ कर गड्ढा'' किया (आयत 4)।[12]

(3) उन्होंने वह किया जो *महंगा* था: एक पल के लिए, मान लें कि आप घर के मालिक हैं। आप बड़े मग्न होकर यीशु का उपदेश सुन रहे हैं। अचानक आप को छत पर से आवाज़ें सुनाई देती हैं। फिर धूल और मिट्टी गिरने लगती है और कुछ देर में घास भी। ऊपर की ओर देखने पर पता चलता है कि आपके घर की छत उधेड़ी जा रही है। आपको कैसा लगेगा? शायद यही कि मेरी छत कौन तोड़ेगा?[13] इसका उत्तर होगा कि ''वे चारों!'' या तो उन्हें छत फिर से ठीक करनी होगी या मरम्मत की कीमत देनी होगी। उन्होंने जो किया वह काफी महंगा था! फिर भी उन्होंने उसकी कोई परवाह नहीं की, वे जैसे भी हो, अपने मित्र को यीशु के पास ले जाना चाहते थे।

बच्चों की कक्षाओं में यह कहानी दोस्ती की शिक्षा देने के लिए बताई जा सकती है। ये चारों मनुष्य कितने अच्छे मित्र थे और हम लोगों के लिए कितना बढ़िया उदाहरण भी। हम सब ऐसे लोगों को जानते हैं, जिन्हें प्रभु की आवश्यकता है। वे बहुत दु:खी हो सकते हैं। उनका जीवन पूरी तरह से उलझ गया है। उन्हें उद्धार की आवश्यकता है, पर उन्हें अहसास नहीं था। उन्हें यीशु के पास लाने के लिए क्या हम प्रयास करने को तत्पर हैं? क्या यह हो सकता है कि हम उन्हें एक बार बुलाएं परन्तु जब वे ''न'' कहें तो हम यह समझ बैठें कि ''ठीक है, हमने प्रयास किया'' और प्रयास करना छोड़ दें? क्या यह हो सकता है कि हम देखते रहें कि ''कब भीड़ थोड़ी कम हो,'' तब आसानी से जा सकेंगे?

आइए हम सच्चाई का सामना करें: हम में से कइयों के लिए लोगों को यीशु के पास लाना कठिन होता जा रहा है। ''भीड़'' रास्ते में आ रही है। हमारे मित्रों के व्यस्त कार्यक्रम, *हमारे* व्यस्त कार्यक्रम, उनकी उदासीनता, *हमारी* उदासीनता रास्ते की रुकावटें हैं। फिर भी यदि हमें यह पूरा विश्वास है कि हमारे प्रियजनों की हर प्रकार की समस्याओं का यीशु ही उत्तर है, और एकमात्र उत्तर है, तो हम तब तक आराम नहीं करेंगे, जब तक हम उन्हें यीशु के पास लाने का कोई न कोई तरीका नहीं निकाल लेते! हम वह सब करने के लिए तैयार होंगे जो कठिन है, जिसकी उम्मीद नहीं की जाती और जो महंगा है![14]

यीशु और रोगी व्यक्ति (मरकुस 2:5-12)

आइए अब हम कहानी के अन्तिम भाग अर्थात यीशु और रोगी व्यक्ति की ओर बढ़ते हैं और देखते हैं कि यीशु ही *हर* समस्या का उत्तर है। हमारा ध्यान उन चारों से हटकर यीशु पर जाता है।

> ... उन्होंने छत को, जिसके नीचे वह था, खोल दिया और जब उसे उधेड़ चुके तो उस खाट को जिस पर झोले का मारा पड़ा हुआ था, लटका दिया। यीशु ने उनका विश्वास देखकर उस झोले से मारे हुए से कहा, ''हे पुत्र तेरे पाप क्षमा हुए'' (आयतें 4, 5)।

मान लें कि यीशु उन लोगों के सामने खड़ा है जो कमरे में भीड़ किए हुए हैं। वह पूरी गम्भीरता से उनके साथ परमेश्वर की बातें कर रहा है, अचानक धूल, गन्दगी और मलबा उसके चारों ओर गिरने लगता है। उसने ऊपर देखा तो पाया कि छत टूट रही है। फिर उसमें एक टेढ़ा-

मेढ़ा छेद दिखता है। थोड़ी देर में चार चेहरे उसकी ओर घूरते नज़र आते हैं, जबकि आठ हाथ उस छेद को बढ़ा रहे थे। अन्त में काफ़ी बड़ा छेद बन गया। सावधानी से; बड़ी ही सावधानी से, उन्होंने अपने मित्र को नीचे उतारा। यहां तक कि उसे यीशु के सामने जमीन पर लिटा दिया। यीशु की प्रतिक्रिया क्या थी? आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी, या मेरी प्रतिक्रिया क्या होती?

कल्पना करें कि एक मण्डली रविवार की आराधना में लीन है, वचन बड़े ध्यान से सुन रही है, और प्रचारक बड़े ही रोचक ढंग से वचन सुना रहा है। अचानक उन्हें छत के ऊपर से कुछ लोगों के कदमों की आवाज़ सुनाई देती है। छत पर कुदाली मारने की आवाज़ सुनाई देती है और फिर आरी चलने की आवाज़ आती है।[15] छत में एक टेढ़ा-मेढ़ा छेद निकाला जा रहा है। यह गोलाकार छेद भीतरी छत को काटता है और उसका एक बड़ा भाग धड़ाम से नीचे फर्श पर गिरता है। देखते ही देखते छत से एक आदमी को उतारा जाता है, जो ''व्यायाम करने वाली चटाई[16] पर लेटा हुआ है'' और चटाई के चारों कोने रस्सियों से बंधे हुए हैं। उनकी प्रतिक्रिया क्या होगी। शायद इस प्रकार होगी ''अरे दूसरों की तरह तुम सामने के दरवाज़े से क्यों नहीं आते?'' शायद सबसे पहले वे उसे धिक्कारेंगे कि ''हमारी इमारत तोड़ने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई! इस सभा में रुकावट डालने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई! तुम्हें पता नहीं कि यहां कितनी महत्वपूर्ण बातें हो रही हैं?''

यीशु ऐसे प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकता था: ''कितने नासमझ लोग हैं! तुम मेरे उपदेश में बाधा डाल रहे हो! इतना ही नहीं, तुम मेरे मेज़बान का भी अपमान कर रहे हो, जिन्होंने बड़ी उदारता से मुझे अपने घर वचन सुनाने की अनुमति दी है?'' परन्तु यीशु ने ऐसी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। यह जानना कितना अद्‌भुत है कि हमारा प्रभु ऐसा है कि जिसके कार्य में रुकावट डाली जा सकती है! वह कई महत्वपूर्ण कार्यों में जुटा हुआ है, ''वह सब वस्तुओं को अपने सामर्थ्य के शब्दों से सहलाता है'' (इब्रानियों 1:3), परन्तु फिर भी हम अपनी मानवीय कमज़ोरियों के साथ उसके पास आ सकते हैं और वह हमारी सुनने के लिए समय निकालेगा।

यीशु की प्रतिक्रिया क्या थी? उसने अपने पैरों के पास खड़े हुए व्यक्ति को देखा! और उसने उस व्यक्ति का रोग ही नहीं उसके मन की निराशा भी देखी। उसको यह स्पष्ट दिखाई दिया कि कालान्तर में किए किसी पाप का बोध उसे खाए जा रहा है। इसलिए यीशु ने उस अधरंगी से कहा, ''हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।'' मूल धर्म शास्त्र में जिस शब्द का अनुवाद ''पुत्र''[17] हुआ है, वह शब्द ''छोटे बच्चे'' के लिए है, जो प्रेम जताने वाला शब्द है। उसी तरह ज़ोर देने के लिए मूल में ''क्षमा हुए'' शब्द पहले है।[18] मूल लेख का अक्षरश: अनुवाद इस प्रकार है: ''हे छोटे-बच्चे, क्षमा हुए तेरे पाप।''

इस आयत से यह शिक्षा नहीं मिलती कि उस अधरंगी मनुष्य का शारीरिक कष्ट उसके आत्मिक पाप के कारण था।[19] यूहन्ना के अध्याय 9 में यीशु ने ज़ोर देकर कहा है कि आवश्यक नहीं कि मनुष्य के अपने पाप के कारण ही शारीरिक कष्ट हो (आयत 2), बल्कि इस आयत से हमें पता चलता है कि *यीशु की प्राथमिकता उस मनुष्य के शारीरिक कष्ट की नहीं बल्कि आत्मिक कष्ट की चिन्ता करना था*। यीशु पहले अति महत्वपूर्ण समस्या की चिन्ता कर रहा था।

पाप की समस्या की नज़र

जब हम कहते हैं कि यीशु ही हर समस्या का उत्तर है, तो हमें यह समझ होनी आवश्यक कि यीशु ही पाप की समस्या का सर्वप्रथम और सर्वोत्तम उत्तर है! संसार में यीशु के आने का पहला उद्देश्य घायल शरीरों को चंगा करना ... या हमारी समस्याओं के लिए कोई नया मनो विज्ञान या जीवन का दर्शन शास्त्र या तर्क शास्त्र लाना नहीं था। इस काम को करने के लिए परमेश्वर कोई महान सिखाने वाला भेज सकता था। उसे इस काम के लिए स्वर्ग के उसके सबसे उज्ज्वल मोती को निकालने की क्या आवश्यकता थी यानी उसे क्रूस पर अपने पुत्र को मरने के लिए भेजने की कोई आवश्यकता न होती! इसके उलट यीशु पाप की समस्या सुलझाने के लिए ही आया था, और केवल वही यह काम कर सकता था। उसने ज़ोर देकर कहा, ''मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है'' (लूका 19:10)।

यह सोचकर आप मन ही मन दु:खी हो रहे होंगे। आप परेशान हो रहे होंगे। आपका शरीर और मन उद्धार पाने के लिए पुकार रहा होगा। यदि आप उद्धार पाना चाहते हैं तो *पहले* आपको अपने आप से पूछना होगा कि ''मेरी *आत्मिक* स्थिति क्या है? परमेश्वर के साथ मेरा सम्बन्ध कैसा है?''

हम ऐसे संसार में रहते हैं, जिसकी सभी प्राथमिकताएं उलट-पुलट की गई हैं। उदाहरण के लिए हम आज परिस्थिति विज्ञान और पर्यावरण के बारे में बहुत कुछ सुनते हैं। मैं मानता हूं कि सृष्टि की रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है। सच्चाई यह है कि परमेश्वर ने पृथ्वी को मनुष्य को सौंपते हुए अच्छा भण्डारी बनने के लिए कहा था (तुलना उत्पत्ति 1:28; 2:15)। परन्तु मैं घबराए हुए लोगों को यह कहते सुनता हूं, ''आखिर, मनुष्य के रहने के लिए यही एक स्थान है!'' उन लोगों के बारे में तो मैं नहीं जानता, परन्तु जहां *मुझे* रहना है, वहां अच्छा है (यूहन्ना 14:1-3)। फिर मैं टेलीविज़न, सिनेमा या रॉक स्टार्स और अन्य प्रसिद्ध लोगों को वायु और जल प्रदूषण पर शोर मचाते हुए सुनता हूं, जबकि स्वयं यही लोग हमारे युवाओं के मनों और आत्माओं को दूषित कर रहे हैं।[20] मैं आशा करता हूं कि हम में से कोई भी पृथ्वी को प्रदूषित नहीं करेगा; परन्तु फिर भी इसे रहने की स्थायी जगह बनाने के लिए कभी भी नहीं बनाया गया था (2 पतरस 3:10-13)। इसके विनाश से बड़ी हानि आत्माओं का नाश होना है!

यदि धर्म शास्त्र में कोई एक बात स्पष्ट रूप से कही गई है, तो वह यही है कि आत्मिक का महत्व भौतिक से अधिक है। मरकुस 2 में यीशु ने उस मनुष्य की शारीरिक समस्या से पहले उसकी आत्मिक समस्या को सुलझाने का कार्य किया। यदि आप दु:खी हैं, कष्ट में हैं तो आपकी समस्या चाहे जो भी हो, यीशु को पहले अपनी *आत्मिक* समस्या सुलझाने दें।

जीवन की *किसी भी* समस्या का उत्तर

उस मनुष्य की प्राथमिक समस्या की चिन्ता करने के बाद यीशु ने यह दर्शाने का प्रयत्न किया कि वह उसकी दूसरी समस्या भी सुलझा सकता है।

अगली आयत में लिखा है कि जब यीशु बोल रहा था, तब उसके आलोचक भी वहीं थे:[21] ''तब कई एक शास्त्री, जो वहां बैठे थे, अपने-अपने मन में विचार करने लगे'' (आयत 6)। ''शास्त्री'' शब्द का मूल अर्थ मूसा की व्यवस्था की प्रति तैयार करने वाले लोग है।[22] शास्त्रियों को

व्यवस्था के जानकार माना जाता था। वे रूढ़िवादी विचारधारा को मानने वाले थे और यीशु पर निगरानी रखते थे।[23] इसमें कोई संदेह नहीं कि हर कोई उन्हें सम्मान देता था, इसलिए प्रमुख स्थान उनके लिए सुरक्षित होते थे।

वे अपने मन में विचार कर रहे थे, ''यह मनुष्य इस तरह की बात क्यों करता है? वह परमेश्वर की निन्दा कर रहा है क्योंकि परमेश्वर के अलावा पाप क्षमा कौन कर सकता है?'' (आयत 7)। उनके विचार में कुछ सच्चाई थी! आज भी कुछ लोग कहते हैं कि यीशु एक भला मनुष्य था, परन्तु परमेश्वर नहीं था। परन्तु यदि यीशु परमेश्वर नहीं था तो वह *परमेश्वर की निन्दा करने वाला* था और इस कारण वह मारे जाने के योग्य था।[24] इसलिए इन शास्त्रियों की विचारधारा का दूसरा तर्कसंगत कदम यह होना चाहिए था कि वे यह पूछते कि ''क्या यीशु परमेश्वर हो सकता है?'' पर अफसोस कि पूर्वाग्रह के कारण वे यह कदम न उठा पाए।

''यीशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में जान लिया कि वे अपने-अपने मन में ऐसा विचार कर रहे हैं, और उन से कहा, तुम अपने-अपने मन में यह विचार क्यों कर रहे हो?'' (आयत 8)। यह जानकर वे अवश्य परेशान हुए होंगे कि उनके मन की बातें यीशु को कैसे पता चल गईं![25] ''सहज क्या है? क्या झोले के मारे से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना कि उठ अपनी खाट उठा कर चल फिर?'' (आयत 9)। वास्तव में यह कहना आसान है कि ''तेरे पाप क्षमा हुए।'' कोई भी नीम हकीम यह बात कह सकता था!

यीशु ने आगे कहा, ''परन्तु जिस से तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर *पाप क्षमा करने* का भी अधिकार है...'' (आयत 10)। मसीहा के लिए ''मनुष्य के पुत्र'' शब्द का इस्तेमाल दानिय्येल ने भी किया था।[26] यीशु उस अद्वितीयपन की घोषणा करता था! पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार केवल यीशु को ही था।[27] जहां तक बाइबल बताती है, उसने इस अधिकार का इस्तेमाल केवल तीन बार किया।[28] अपने अधिकार को साबित करने के लिए उसने लकवे के मारे उस व्यक्ति से कहा, ''मैं तुझ से कहता हूं; उठ, अपनी खाट उठा कर अपने घर चला जा'' (आयत 11)।

यीशु ने उस व्यक्ति की *गौण* समस्या अर्थात उसकी बीमारी को दूर करने की अपनी योग्यता का इस्तेमाल करके यह सिद्ध करने की पेशकश की कि उसे उस व्यक्ति की *प्रमुख* समस्या यानी उसके पाप का दोष दूर करने का अधिकार है। रोमियों के नाम पत्री में पौलुस ने इसी विचार को प्रकट किया, अन्तर केवल इतना है कि उसने यह तर्क थोड़ा सा घुमाकर पेश किया है: ''उसे [अर्थात परमेश्वर] ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा?'' (रोमियों 8:32)। या यूं कहें कि परमेश्वर ने हमारी प्रमुख समस्या अर्थात पाप की समस्या का हल निकाला है तो वह हमारी किसी भी गौण समस्या को दूर कर सकता है।

यीशु के यह कहने के बाद कि ''उठ, अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा'' मचने वाले तहलके की कल्पना करें! हर किसी की आंखें लकवे के मारे उस व्यक्ति पर लग गई होंगी। यदि उसके बाद भी वह वहीं पड़ा रहता तो सब ने आहें भरते हुए यह कहते हुए अपने घर लौट जाना था, ''हमें तो लगा था कि मसीहा आ गया है, परन्तु हम फिर गलत समझे।'' दूसरी ओर यदि वह व्यक्ति उठकर खड़ा हो जाता और अपनी खाट उठाकर दरवाज़े में से बाहर चला जाता तो? तो क्या

सम्भावनाएं हो सकती थीं! इससे यह सिद्ध हो जाता कि यीशु जीवन की हर समस्या का हल है!

''और वह उठा, और तुरन्त खाट उठाकर और सब के सामने से निकलकर चला गया''[29] (आयत 12)! नये नियम के अन्य आश्चर्यकर्मों की तरह ही यह आश्चर्यकर्म भी तुरन्त, पूर्णतया विश्वास दिलाने वाला था (आज के कथित आश्चर्यकर्मों के विपरीत)। सुसमाचार के वृत्तातों के लेखकों ने इसका उल्लेख करने में अपना शब्द भण्डार ही दर्शकों की प्रतिक्रियाएं प्रकट करने के लिए खाली कर दिया, जिसमें मरकुस ने कहा कि ''इस पर सब चकित हुए और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे कि हम ने ऐसा कभी नहीं देखा'' (आयत 12)। मत्ती ने लिखा कि ''लोग यह देखकर डर गए और परमेश्वर की महिमा करने लगे, जिसने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया है'' (मत्ती 9:8)। लूका ने कहा कि ''तब सब चकित हुए और परमेश्वर की बड़ाई करने लगे और डर कर कहने लगे, 'आज हमने अनोखी बातें देखी हैं' '' (लूका 5:26)।[30] यीशु ने दिखा दिया था कि वह जीवन की हर समस्या का उत्तर था, और है!

सारांश

इस समय आप की चाहे कोई भी समस्या क्यों न हो यीशु आपकी सहायता कर सकता है। कुछ परिस्थितियों में वह उस समस्या को दूर भी कर सकता है, जैसे उसने लकवे के मारे उस व्यक्ति की समस्या दूर की थी। आवश्यक नहीं कि वह वही आश्चर्यकर्म करे, जो उसने उस व्यक्ति के साथ किया था, क्योंकि आज वह वैसे काम नहीं करता, परन्तु इस संसार में आवश्यकता के अनुसार उपाय करके काम अवश्य करता है।[31] अन्य परिस्थितियों में वह आप को अपना बोझ उठाने और उस पर जयवन्त होने की सामर्थ देगा।

यदि आप प्रभु की सहायता चाहते हैं तो पहले आवश्यक है कि सच्चे मन से यह देखें कि उसके साथ आपका सम्बन्ध कैसा है। यीशु का सबसे पहला और सबसे प्रमुख ध्यान आपके स्वास्थ्य की ओर है। यदि आप मसीही नहीं हैं तो आपके लिए आवश्यक है कि आप अपने पापों से मन फिराएं, यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार करें और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा (पानी में डुबकी) लें (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)। यदि आप परमेश्वर की अविश्वासी संतान हैं तो पश्चाताप और प्रार्थना के द्वारा अभी प्रभु और उसकी कलीसिया में लौट आएं (प्ररितों 8:22; याकूब 5:16)।

परमेश्वर के साथ आपका सम्बन्ध सही होने पर आपको ऐसे स्त्रोत मिलेंगे जिनके बारे में आपने कभी सोचा भी नहीं होगा। आपके पास कोई ऐसा होगा, जिसे सचमुच आपकी चिन्ता है। आपको ऐसी शक्ति मिलेगी जैसी पहले कभी नहीं मिली थी। परमेश्वर ने आपकी समस्याओं के हल के लिए अपनी बुद्धि देने की प्रतिज्ञा की है (याकूब 1:5)। आपको एक आत्मिक परिवार मिलेगा जिसे कलीसिया कहा जाता है, यह उन लोगों का समूह है जो आपकी सहायता कर सकते हैं, आपको सहारा दे सकते हैं।

निश्चय जानें कि यीशु ही हल है अर्थात वही उत्तर है (यूहन्ना 14:6)। यदि आप यीशु को ठुकराते हैं तो उसके अलावा और कोई पक्का हल नहीं है, जो संतोषजनक उत्तर दे सके। केवल अन्धेरा और भव-चक्कर ही मिलेगा। यीशु के पास अभी आ जाएं!

टिप्पणियां

[1]''घर'' यहां पतरस की सास के घर को कहा गया हो सकता है। [2]बचपन में जब मैं ओक्लाहोमा में रहता था तो कांपते हुए हाथ बाहर निकाल कर लोगों को यह कहते सुना करता था कि मुझे ''अधरंग हो गया है।'' इस बेचारे को यह कष्ट *नहीं* था। [3]चार्ल्स के. अर्डमैन, *द गॉस्पल ऑफ मार्क* (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1964), 50. [4]आयत 10 में ''अधिकार'' है। [5]मेरा परिवार सचमुच ऐसे विज्ञापनों को मानता है! ऑस्ट्रेलिया से वापस आने के कुछ साल बाद मेरी मंझली बेटी तीन साल के लिए फिर से ऑस्ट्रेलिया चली गई। बाद में मेरी बड़ी बेटी की शादी हो गई और वह मैने नगर में चली गई। सबसे छोटी बेटी ने यूनिवर्सिटी से डिग्री लेने के बाद जापान के जूनियर हाई स्कूल के छात्रों को अंग्रेज़ी सिखाते हुए तीन साल बिताए। अब मेरी सब से बड़ी बेटी और उसका परिवार रोमानिया में है। जब हम किसी के दिल को छू लेने के लिए बाहर निकलते हैं तो हम सचमुच *बाहर जाते* हैं। [6]अमेरिका के कई पाठक इस वाक्य को समझ जाएंगे: ''वे अच्छी सूरत वाले लोगों के पास गए न कि बुरे और कुरूप लोगों के पास।'' [7]कुछ लोग मेरे साथ सहमत नहीं हैं पर मुझे लगता है कि यदि यीशु एक ही शब्द से मुर्दे को जिला सकता था तो वह कोढ़ी को भी बिना हाथ लगाए अच्छा कर सकता था। [8]अक्सर जब हम सहायता के लिए यीशु के पास आने की कोशिश करते हैं तो हमारे रास्ते में भीड़ आ जाती है। शैतान कोशिशें करता है कि किसी न किसी प्रकार हमारे रास्ते में रुकावट डाल दे। हम सचमुच यीशु के पास आना चाहते हैं और सच्चे दिल से आना चाहते हैं, जैसे इस पाठ के लिए बाइबल के वचनों में वे चार लोग आए थे। [9]यदि यह कलीसिया के प्रार्थना भवन में हुआ होता तो मेरा सुझाव होता कि ''योजना बनाने के लिए एक *कमेटी* बनाते हैं ... और योजना का मूल्यांकन करने के लिए हम फिर से सभा करेंगे।'' [10]पाठ के इस भाग में तीन मुख्य विचार, विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू*, अंक 1, द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1956) से लिए गए हैं।

[11]मैं छह परिवारों के एक दल के साथ ऑस्ट्रेलिया गया था। आरम्भ में हम में से अधिकतर लोगों को छह महीनों की लीज़ वाले फर्निशड (सामान सहित) मकान ही किराये पर मिले। इसका अर्थ यह था कि महीने में औसतन एक बार हम दल के परिवारों के पास जाएं। घरों में कपड़े रखने वाली अलमारियां नहीं थीं, इसलिए हमें कपड़े रखने वाली अलमारियां खरीदनी पड़ीं (काफी महंगी और भारी) और उन्हें हर बार ले जाना पड़ता था, कई बार तो सीढ़ियां भी चढ़ानी पड़ती थीं। मैं बता सकता हूं कि किसी वस्तु को छत पर चढ़ाना कितना कठिन होता है! [12]लूका 5 की मेल खाती आयत में कहा गया है कि ''उन्होंने छत पर चढ़कर और खपरैल हटाकर उसे खाट समेत बीच में यीशु के सामने उतार दिया'' (आयत 19), सो छत किसी और प्रकार से बनी होगी। उसमें जो भी सामान लगा हो, परन्तु चार आदमियों को अपने दोस्त को यीशु तक पहुंचाने के लिए छत उधेड़नी पड़ी थी। [13]मैंने यही सोचा होता कि ''इसका खर्च अपने मकान मालिक के बीमे में से काट लूंगा।'' [14]यदि मण्डली में सुसमाचार सुनाने की कोई खास कोशिश हो रही हो तो सदस्य अपने मित्रों को खाने पर बुला सकते हैं और उन्हें वचन सुना सकते हैं। यह काफी ''महंगा'' हो सकता है। कहानी में से एक संकेत लिया जा सकता है और इस भाग को दूसरे सदस्यों को दिया जा सकता है: ''यदि *चार* जन मिलकर (दो दम्पत्ति भी हो सकते हैं) किसी खोए हुए को सुसमाचार की इस सभा के दौरान यीशु के पास ले आएं? कुछ लोग जिन्हें यीशु की आवश्यकता है चार मित्रों के इस स्नेहपूर्ण सुझाव का विरोध नहीं करेंगे।'' [15]स्थानीय कलीसिया के प्रार्थना भवन की छत में से आने के लिए जो भी व्याख्या की जा सकती है, करें। [16]अधिकतर लोग अब नीचे टाट बिछाकर नहीं सोते हैं इसलिए सोने वाले दरी के बजाय व्यायाम करने वाली चटाई से आसानी से समझाया जा सकता है। अन्य क्षेत्रों में, सुनने वाले जिस भी टाट को समझ सकते हों उसी का उदाहरण इस्तेमाल किया जाए। [17]*Teknon* वह मूल शब्द है, जिसका अनुवाद यहां ''पुत्र'' हुआ है। [18]बल देने के लिए जैसे हम शब्दों को रेखांकित करते या उन्हें इटैलिक (तिरछे) करते हैं। यूनानी लोग आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल नहीं करते थे। परन्तु किसी शब्द पर बल देने के लिए उनका ढंग उसे वाक्य के आरम्भ में या पहले शब्द के निकट रखना होता था। [19]बाइबल के समय में यह एक आम धारणा थी (अय्यूब 4:7; 27:5-10; लूका 13:4; यूहन्ना 9:2)। कई बार पाप और शारीरिक कष्ट का सीधा सम्बन्ध होता है, जैसे एड्स। परन्तु इस कहानी में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि इस व्यक्ति में शारीरिक कष्ट का उसकी आत्मिक समस्याओं से कोई सीधा सम्बन्ध था। [20]कई ''सुपरस्टार'' उन्हें देखने, सुनने और/या पूजने वाले लोगों के मन और आत्मा को दूषित कर देते हैं।

[21]कई बार मैं थोड़ा हंसाने वाली बात जोड़ देता हूं: ''आप को विश्वास करना कठिन लग सकता है, परन्तु वहां

(पड़ोस के राज्य या इलाके में) अभी भी आराधना के लिए आने वाले आलोचक किसी भी बात में कमी ढूंढ़ने को तैयार रहते हैं!'' [22]शास्त्री के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''scribe'' और ''scribble'' आपस में जुड़े हुए हैं। [23]लूका 5:17 में भी लिखा है कि ''गलील और यहूदिया के हर एक गांव और यरूशलेम से आए कई फरीसी और व्यवस्थापक'' वहीं थे (तुलना लूका 5:21)। किसी प्रचारक की गलती निकालने में कोई बुराई नहीं है (प्रेरितों 17:11)। उस समय की तरह ही आज भी झूठे शिक्षक हैं, जिन्हें सामने लाना आवश्यक है (1 यूहन्ना 4:1)। जो कुछ वे लोग कर रहे हैं *यदि* सच्चे मन से होता तो ठीक था। परन्तु वे ईमानदारी से ऐसा नहीं कर रहे। [24]लैव्यव्यवस्था 24:16. [25]जहां तक बाइबल बताती है, केवल यीशु ही लोगों के मन की बात पढ़ सकता था और उसे ही पता होता था कि वे क्या सोच रहे हैं। आज यदि कोई ऐसा ही होने का दावा करता है तो वह प्रभु के तुल्य होने का दावा कर रहा है। [26]''मनुष्य का पुत्र'' शब्द सुसमाचार की पुस्तकों में अस्सी बार और मरकुस की पुस्तक में चौदह बार इस्तेमाल किया गया है। मरकुस में यह शब्द पहली बार यहां आया है। [27]पाप क्षमा करने का अधिकार किसी मनुष्य को कभी नहीं दिया गया था। [28]उन तीन में से एक यहां पर व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री (यूहन्ना 8:11) और क्रूस पर यीशु के साथ मरने वाले डाकू के साथ (लूका 23:43)। [29]''सब के सामने'' पूरी तरह से देखा जाने वाला है। कोई भी इसे झुठला नहीं सकता था। [30]सभी लेखकों ने बल दिया है कि इस आश्चर्यकर्म का मुख्य परिणाम यह था कि लोगों ने ''परमेश्वर की बड़ाई'' की। यीशु ने हमेशा परमेश्वर को महिमा दी, जैसे हमें भी देनी चाहिए।

[31]आश्चर्यकर्म प्रकृति के नियम के विपरीत या उससे ऊपर होते हैं, उपाय प्रकृति के नियम के द्वारा ही होता है।

यीशु के कदमों में

जब लोग यीशु की आराधना करते हैं, वे उसके कदमों में टूटी हुई अधीनता में नहीं, बल्कि अद्‌भुत प्रेम में झुकते हैं। आदमी यह नहीं कहता कि ''मैं इतनी बड़ी शक्ति का सामना नहीं कर सकता।'' वह कहता है, ''प्रेम इतना अद्‌भुत, इतना ईश्वरीय, मांगे मेरा जीवन, मेरा प्राण, मेरा सब!'' आदमी यह नहीं कहता, ''मैं समर्पण में कुचला गया हूं।'' वह कहता है, ''मैं आश्चर्य, प्रेम और महिमा से खोया हूं।''

फिलिपियंस
विलियम बार्कले